मार्च–अप्रैल 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

अमन सैनी, कक्षा-4, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा

खेल खिलाड़ी

5 गुल्ली-डंडा

उड़ान

7 उसने ना ली मेरी सलाह

गड़ गड़ तड़ तड़

8 तितली देखो / दादा पढ़ाएगा

9 अपनी गुफा

10 जंगल में दुकान

हरीशचंद का दादा

12 ईमानदार मंत्री

ज्ञान विज्ञान

14 फसल

जोड़-तोड़

15 सोची समझी योजना

कलाकारी

18 संगीत का जादू

बात लै चीत ले

19 मिट्टी की दांतड़ियाँ

20 रेल्वे प्लेटफार्म का दृश्य

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

सम्पादन : विष्णु गोपाल

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : मानसिंह मीना

वितरण : लोकेश राठौर

आवरण चित्र : **प्रिया मीना**, उम्र-8 वर्ष, फेलोशिप सेंटर हीरामन की ढाणी

वर्ष 13 अंक 141-142

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन

शुभम गर्ग

निदेशक,

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर

(राजस्थान) 322001

फोन: 07462-220957

आराध्या वर्मा, कक्षा-4, फेलोशिप सेंटर कुतलपुरा मालियान

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

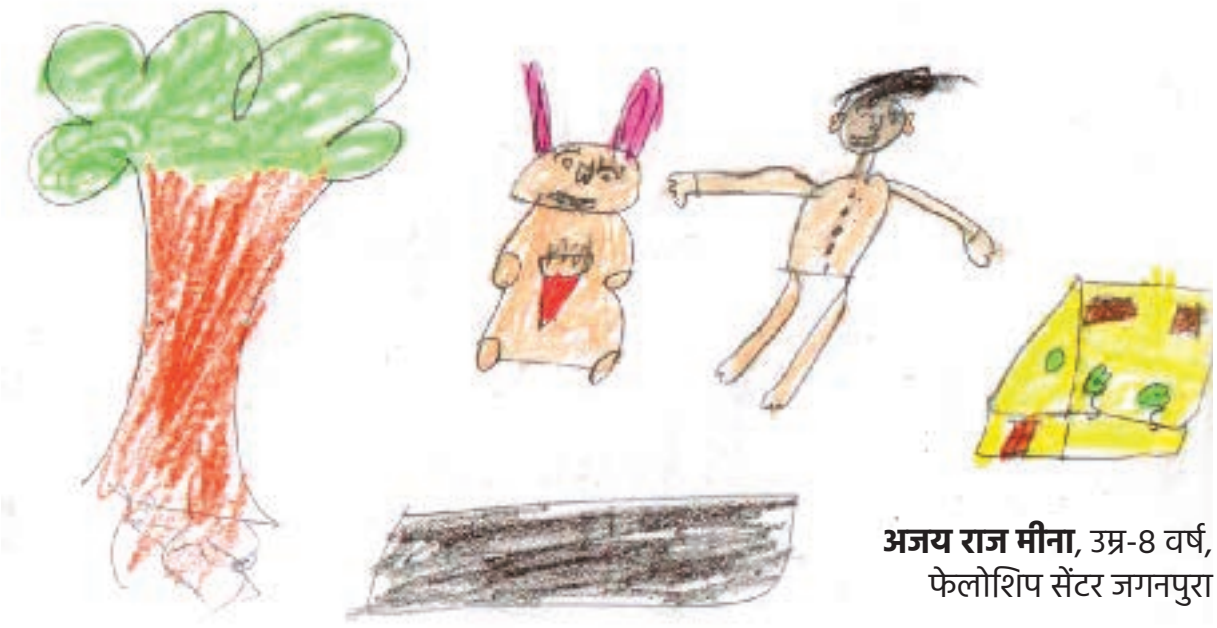

अजय राज मीना, उम्र-8 वर्ष,
फेलोशिप सेंटर जगनपुरा

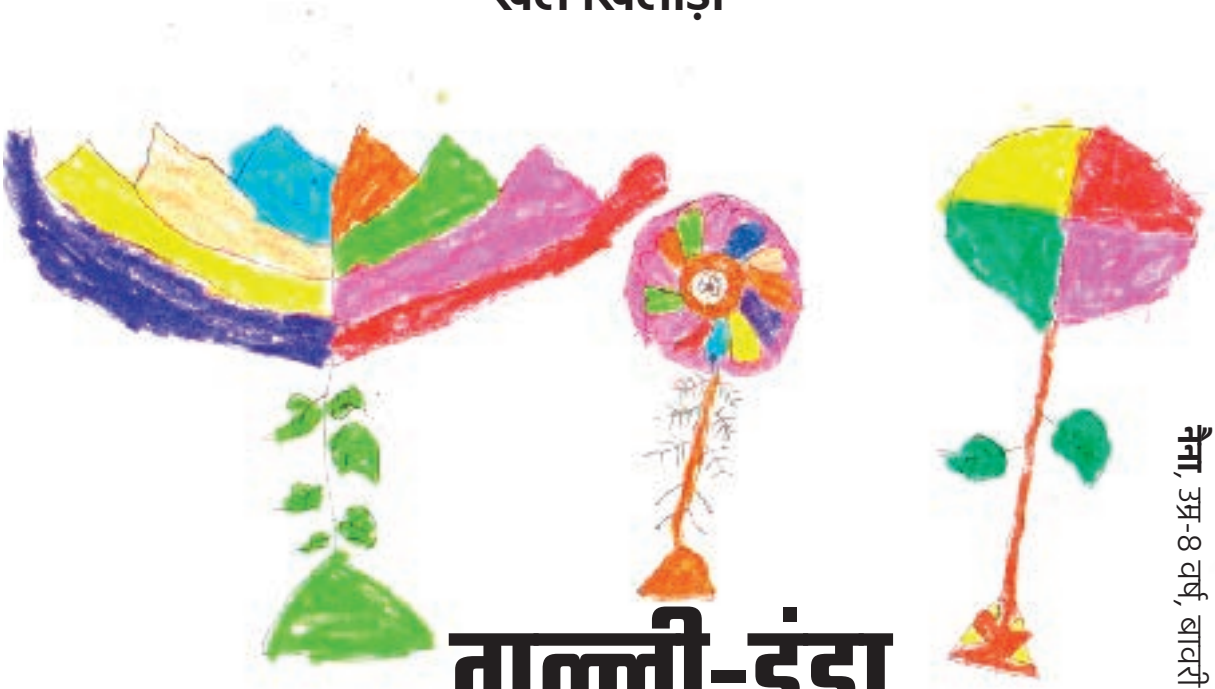

गुल्ली-डंडा

नैना, उम्र-8 वर्ष, बावरी बस्ती

हमारें दोस्त मानें या न मानें मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हूँ तो जी लोट-पोट हो जाता है। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी भी आ जाए तो खेल शुरू हो गया।

यह अपनी-अपनी रूचि है। मुझे गुल्ली सब खेलों से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियों में गुल्ली ही सबसे मीठी है।

वो प्रातःकाल घर से निकल जाना, वो पेड़ पर चढ़कर टहनियाँ काटना और गुल्ली-डंडे बनाना। वह उत्साह, वह खिलाड़ियों के जमघटे, वह पदना और पदाना, न नहाने की सुधि है, न खाने की। गुल्ली है तो जरा सी, पर उसमें दुनिया-भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों का आनन्द भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो-तीन साल बड़ा होगा। गुल्ली कैसी ही हो, पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। जिसकी तरफ वह आ जाए, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौड़कर स्वागत करते थे और अपना गोइयाँ बना लेते थे।

एक दिन मैं और गया दोनों ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था, मैं पद रहा था। मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन-भर मस्त रह सकते हैं, पदना एक मिनट का भी अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चलीं लेकिन गया अपना दाँव लिये बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय-विनय का कोई असर न हुआ था।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला, "मेरा दाँव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादूर बनके, पदने के मारे क्यों भागे जाते हो।"

"तुम दिन-भर पदाओ तो मैं दिन-भर पदता रहूँ?"

"हाँ, तुम्हें दिन-भर पदना पड़ेगा।"

"न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?"

"हाँ, मेरा दाँव दिये बिना कहीं नहीं जा सकते।"

"मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?"

"हाँ मेरे गुलाम हो।"

"मैं घर जाता हूँ, देखूँ मेरा क्या कर लेते हो?"

"घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, दावँ लेंगे।"

"अच्छा, कल मैंने अमरूद खिलाया था, वह लौटा दो।"

"वह तो पेट में चला गया।"

"निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?"

"अमरूद तुमने दिया, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने न गया था।"

"जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दाँव न दूँगा।"

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा, "मेरा दाँव देकर जाओ, अमरूद-समरूद मैं नहीं जानता।" मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। वह मुझे जाने न देता। मैंने उसे दाँत से काट लिया। उसने मेरी पीठ पर डंडा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुकाबला न कर सका। मैंने तुरन्त आँसू पौंछ डाले, डंडे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर पर जा पहुँचा।

मुंशी प्रेमचंद

गोलमा मीना, कक्षा-3, फेलोशिप संटर-जमुलखेड़ा

उसने ना ली मेरी सलाह

उसने ना ली मेरी सलाह
उसने कर दिया बाल विवाह
लड़की को ना पहचान थी
वो तो अभी नादान थी
जो फैसला लिया माँ-बाप ने
उनके सामने वो लगी कांपने
कैसे करती वो भी मना
करना पड़े उसे बाल विवाह
बात ना यह घरवाले जाने
बाल विवाह को यह ना माने
घरवाले एक यही तो चाहे
सिर से बेटी का बोझ हट जाये।

उदय सामुदायिक पाठशाला,
फरिया के बच्चे

सपना सैनी, उम्र-13 वर्ष फेलोशिप सेंटर-कुतलपुरा

बलदेव, उम्र-6 वर्ष, बावरी बस्ती

गड़ गड़ तड़ तड़

गड़-गड़-गड़-गड़ गरजे बादल।
तड़-तड़-तड़-तड़ चमकी बिजली।
टप-टप-टप-टप गिरती बूंदे।
छप-छप-छप-छप करते बच्चे।
कलकल करती नदियाँ।
कूदे उसमें बछियाँ।

ममता साहू, शिक्षिका, राजकीय विद्यालय बोदल।

तितली देखो

आसमान में तितली देखो
उड़ती-उड़ती तितली देखो
नटखट चंचल तितली देखो
फूल पर बैठी तितली देखो
हवा संग झूमती तितली देखो
तितली-तितली, तितली देखो
भवरों के संग खेलती देखो
नीली पीली काली तितली देखो
फूलों का रस पीती तितली देखो
रंग बिरंगी तितली देखो।

सविता मीना, उम्र-12 वर्ष, समूह-तिरंगा

दादा पढ़ाएगा

आज दादा आयेगा
एक केला लायेगा
केला मुझे खिलायेगा
बहुत मजा आयेगा
लोरी सुनाकर सुलायेगा
रोज पढ़ाई करायेगा
पढ़कर आगे बढ़ायेगा
नाम ऊँचा करवायेगा।

हरिओम सैनी, कक्षा-6,
रा.उ.प्रा.वि. सोनकच्छ

कविता, फेलो, फेलोशिप सेंटर-बावड़ी

अपनी गुफा

अकलेश सैनी, उम्र-10 वर्ष, फेलोशिप सेंटर-खवा

एक बार एक जंगल था। वह बहुत हरा-भरा था। उसमें कोई भी नहीं था।

वह जंगल बहुत सुंदर लग रहा था। उसमें आदमी घूमने जाते थे।

एक दिन उस जंगल में दो आदमी घूमने गये। उनका नाम सोनू और अर्जुन था। वे दोनों जंगल में घुमते-घुमते आगे निकल गये तो उन्हें रात हो गई। वे दोनों एक पेड़ के नीचे सो गये।

रात में अर्जुन की नींद खुली तो उनके पास एक खरगोश आया। खरगोश के पीछे एक सांप उसे खाने के लिए भाग रहा था। सांप से बचने के लिए खरगोश उनके पास छिप गया।

उन्हें सुबह हो गई वे दोनों खरगोश को भी अपने साथ ले आए।

वह खरगोश बहुत उदास रहता था। अर्जुन ने उसे जंगल में छोड़ने के लिए कहा।

मोनू ने हाँ कर दी।

अर्जुन उसे जंगल में छोड़कर आ गया और खरगोश वापस अपनी गुफा में चला गया और वहीं पर रहने लगा।

अशोक, उम्र-12 वर्ष, समूह-तिरंगा

जंगल में दुकान

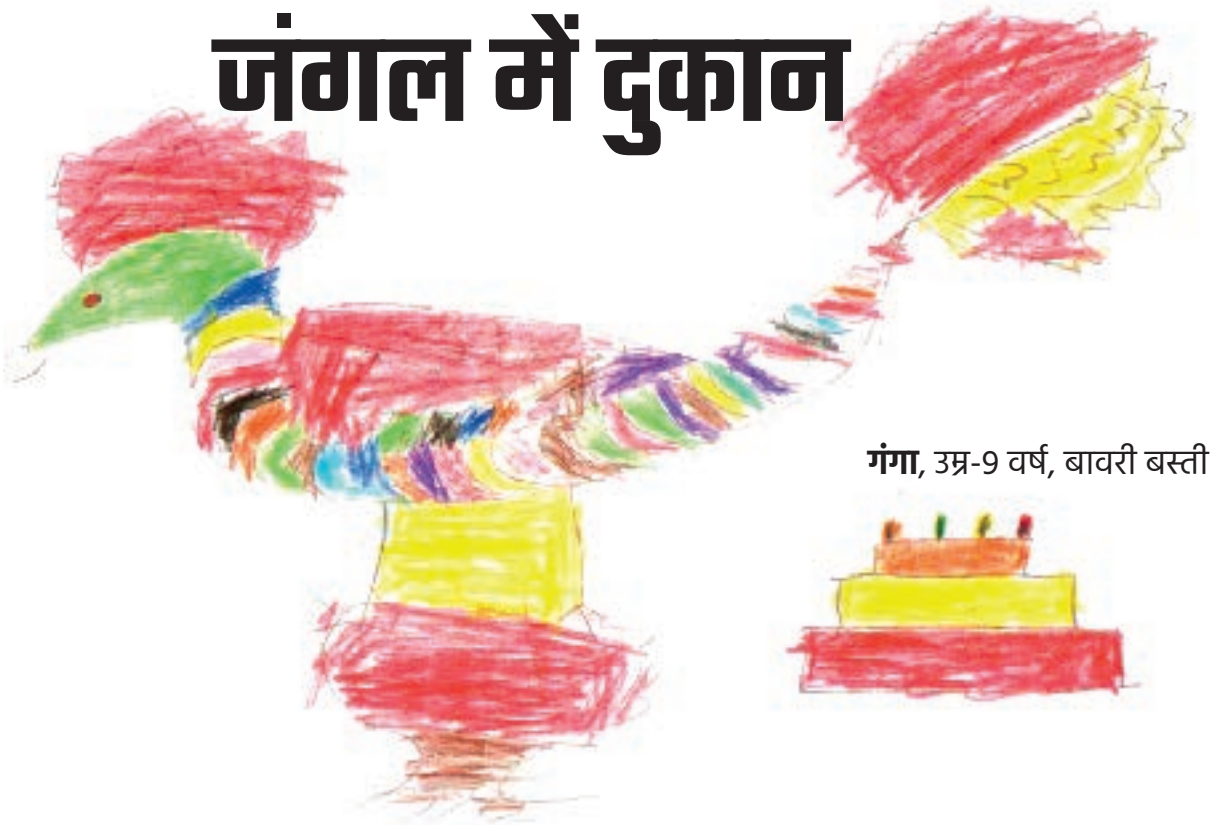

गंगा, उम्र-9 वर्ष, बावरी बस्ती

घने जंगल में एक खरगोश और बंदर अलग-अलग रहते थे। खरगोश बेचारा मासूम सा छोट सा जीव। मुसीबत आने पर सिवाय भागने के और कुछ नहीं कर सकता। उस पर भी अगर लाईट पड़ जाए तो चकमा देना भूल जाता है। बंदर तो पेड़ों का राजा हवा में लहराना और लंबी लंबी छलांग लगाना तो उसके लिए खेल है। पर मजबूरी सबको साथ ले आती है। उस जंगल के पास गाजर का खेत था। पर उसमें घुसना खरगोश के वश की बात नहीं थी। इसलिए उसने बंदर से दोस्ती की। अब यों ही तो कोई किसी का दोस्त नही बन जाता। तो भला बंदर क्यों मानता खरगोश की बात। एक दिन खरगोश ने बंदर से कहा कि आज मैं तुम्हे गाजर का हलवा खिलाऊंगा अगर तुम खेत से गाजर ले आओ तो। बंदर को बात अच्छी लगी। उसके लिए ये कोई मुश्किल काम नहीं था। वह हवा में उछलता कूदता गया और गाजर ले आया। और खरगोश को देते हुए कहा, "मुझे गाजर का हलवा बहुत अच्छा लगता है। मैने महादेवजी के मंदिर पर खाया था। एक औरत ने मुझे थोड़ा सा दिया। पर अब बहुत दिन हो गये।"

खरगोश गाजर लेकर गुफा में चला गया और गाजर का हलवा बना लाया। खरगोश और बंदर को गाजर का हलवा बहुत ही अच्छा लगा। बंदर बोला, "हम दोस्त बन जाते हैं। और अब दोनों मिलकर रोज गाजर का हलवा बनायेंगे।"

खरगोश बोला ठीक है। वे रोज गाजर का हलवा बनाते। एक दिन वहाँ एक भालू आ गया। भालू बोला, "मुझे पता है तुम साथ क्यों रहते हो। मुझे भी गाजर का हलवा खिलाओ।"

बंदर बोला, "तुम्हें कैसे पता चला कि हमने गाजर का हलवा बनाया है?"

भालू ने कहा, "तुम्हारे गाजर के हलवे की खुशबू बहुत तेज आ रही है।"

बंदर ने कहा, "तुम गाजर के हलवे के बदले हमें क्या दोगे?"

भालू ने कहा, "मेरे पास बहुत सारा मीठा शहद है, अगर तुम हलवे में उसे मिलाओगे तो तुम्हारा हलवा मीठा होने से और ज्यादा स्वादिष्ट हो जाएगा।"

बंदर बोला, "ठीक है शहद के साथ तुम रोज गाजर का हलवा खाने आ जाया करो।"

भालू बोला, "ठीक है।"

अब तो भालू रोज आता, गाजर का हलवा खाता और बदले में शहद देकर चला जाता। बंदर और खरगोश की जोड़ी ने दोनों का काम आसान कर दिया। अब तो दूसरे जानवर भी हलवा लेने आने लगे। वे कुछ ना कुछ लाते और बदले में हलवा लेकर चले जाते। धीरे-धीरे दोनों ने हलवे की दुकान ही खोल ली। उनकी दुकान पूरे जंगल में प्रसिद्ध हो गई। हलवे ने उनकी दोस्ती को बहुत पक्का कर दिया अब वे खुशी-खुशी से रहने लगे। ।

विजय गुर्जर, उम्र-8 वर्ष, समूह-झरना।

हरीशचंद का दादा

एक गाँव था। उस गाँव में एक किसान रहता था। उस किसान के एक लड़का और एक लड़की थी। लड़की का नाम सोनी और लड़के का नाम मनोहर लाल था। किसान का नाम हरीचंद्र था।

एक दिन उस लड़के ने कहा, "पिताजी मैं पढ़ना चाहता हूँ। देखो सोनी कक्षा 8 में पढ़ रही है और मैं बकरियाँ चराता हूँ।"

किसान ने कहा, "बेटा अभी तक तो यह फसल भी बड़ी नहीं हुई है। इस फसल को बड़ी होने दो, तब इसे बेचकर जो मिलेगा उन रुपयों से तुम्हें पढ़ा दूंगा।" मनोहर लाल खुश हुआ और वापस बकरियाँ चराने लगा। उसका ध्यान बकरियों पर नहीं था। क्योंकि उसके पिताजी ने पढ़ने के लिए कह दिया था। इसलिए वह फसल पर ही ध्यान रखता था।

किसान ने फसल काटकर बेच दी और उससे मिले रुपयों से एक भैंस ले आया।

लड़के ने कहा, "पिताजी अब तो मुझे पढ़ाओ।"

किसान बोला, "मुझे तो ध्यान ही नहीं रहा, मैं फसल के रुपयों की भैंस ले आया।" किसान ने फिर कहा कि ऐसा करते हैं बकरियों को बेच देते हैं।

इस तरह किसान ने अपनी बकरियों को बेच दिया और लड़के को पढ़ने के लिए स्कूल में रख दिया। अब हरीशचंद का लड़का खुश हो गया। भैंस ने भी बहुत दूध दिया जिसे बेचकर उनके पास बहुत सारे रूपये इकट्ठे हो गये। वह लड़का भी पढ़ लिखकर चिट्ठी बेचने का काम करने लगा और उन्होंने मकान बना लिया। अब लोग उस किसान को हरीशचंद का दादा कहने लगे।

मनीषा, उम्र-8 वर्ष, समूह-सागर

आरती सैनी, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर-खवा

ईमानदार मंत्री

एक राजा था। उसका नाम बलवीर था। बलवीर बहुत बुद्धिमान था। उसे एक ईमानदार मंत्री की आवश्यकता थी। उसने सैनिकों से कहा कि जाओ और गाँव में ऐलान करवा दो कि राजमहल में सभा आयोजित होगी। उस सभा का प्रमुख उद्देश्य मंत्री को चुनना एवं नियुक्त करना है। राजा अपने लिए एक मंत्री चाहता है।

यह ऐलान सैनिकों ने गाँव में कर दिया। गाँव के बहुत से व्यक्ति मंत्री बनने के लिए आए। राजा ने कहा मैं एक-एक से प्रश्न पूछूंगा। जिसने सारे प्रश्नों का जवाब दे दिया वही मेरा ईमानदार मंत्री बनेगा। पहले एक आदमी आया।

राजा ने पूछा कि यदि तुम्हें रास्तें में किसी आदमी का पर्स मिल जाये तो तुम क्या करोगे? आदमी बोला, उस पर्स को मैं रख लूंगा।

दूसरा प्रश्न- तुम्हारे पास रूपये नहीं हैं तो तुम क्या करोगे?

आदमी - पापा से कहूंगा कि मुझे रूपये दे दे।

राजा-यदि नहीं दिए तो क्या करोगे?

आदमी - पापा के पत्थर मारने की धमकी दूगा। राजा ने उसे भेज दिया और इस तरह सब आकर चले गये। एक गरीब व्यक्ति आया। उससे राजा ने ये प्रश्न पूछे।

राजा - किसी का पर्स गिर जाए और तुम्हें मिल जाये तो तुम क्या करोगे?

सुनीता प्रजापत, उम्र-11 वर्ष, फेलोशिप सेंटर-जगनपुरा

व्यक्ति ने कहा - उसे सही सलामत वापस लौटाऊंगा।

राजा- यदि तुम्हारे पास रुपये नहीं हैं तो तुम क्या करोगे?

व्यक्ति- मैं स्वयं मेहनत करके कमाऊंगा। राजा ने कहा कल से दरबार में आ जाना। व्यक्ति "धन्यवाद महाराज" कहकर चला गया। सुबह जब वह व्यक्ति आया तो राजा ने उसका नाम पूछा। उसने कहा मेरा नाम सोहन है। राजा ने उसे दूसरे कपड़े पहनने को कहा। उसने कपड़े पहन लिए। राजा ने सोचा सोहन दिखने में तो सीधा-साधा ईमानदार लगता है। क्यों न इसकी परीक्षा ली जाए।

राजा ने दो सोने की मुद्रा चटाई पर रख दी और छिप गया। जब सोहन आया तो उसने वे मुद्रायें उठाकर राजा को दे दी। दूसरे दिन राजा ने अपना मुकुट मेज पर रख दिया और छिप गया। जब सोहन आया तो सोहन ने सोचा कि राजा ने मुकुट मेज पर रख दिया और शायद भूल गये हैं। इसे कोई उठा कर ले जा सकता है। उसने मुकुट उठाकर राजा को दे दिया। राजा ने फिर सोचा कि सोहन तो बड़ा ही ईमानदार है।

एक बार वह अपनी सेना एवं परिवार को लेकर किसी उत्सव में गये और सारा राजपाट सोहन के भरोसे छोड़ गये। सोहन ने जब खजाने में धन, मुद्रा आदि देखी तो उसकी नियत बिगड़ गई। वह धन लेकर दूसरे देश चला गया। जब राजा वापस आया तो उसने अपना धन देखा। उसे धन नहीं मिला। राजा ने निश्चय किया कि मैं आज के बाद पराये व्यक्ति पर इस तरह विश्वास नहीं करूंगा।।

आरती मीना, समूह-उजाला, उम्र-13 वर्ष

फसल

मुस्कान, कक्षा-9, बावरी बस्ती

एक बार की बात है। हमें अमजद गुरुजी विज्ञान पढ़ा रहे थे। विज्ञान में हमें उन्होंने बताया कि फसलें कितने प्रकार की होती हैं। और कहा किस ऋतु में कौनसी फसल बोई जाती है। उन्होंने बताया की वर्षा ऋतु में तिल, बाजरा, मोठ, ग्वार आदि बोई जाती है और यह फसल जून से सितम्बर के मध्य बोई जाती है।

शीत ऋतु में गेहूँ, सरसों, जौ, चना, मटर आदि बोई जाती है। यह फसल अक्टूबर से फरवरी के मध्य की फसल होती है और ग्रीष्म ऋतु में खरबूजा, तरबूज, ककड़ी आदि होते हैं। यह फसल मार्च से जून के मध्य बोई जाती है।

मैंने पूछा की गुरुजी फसल किसे कहते हैं? तो हमें गुरुजी ने बताया कि जब एक प्रकार के पादप भूमि के बहुत बड़े क्षेत्र में एक साथ उगाये जाते हैं तो उसे फसल कहते हैं।

मैंनें फिर पूछा कि गुरुजी खेती करने के कितने चरण होते हैं? तो उन्होंने बताया कि खेती करने के सात चरण होते हैं। मैंने पूछा कौन-कौनसे तो उन्होंने बताया कि, मिट्टी तैयार करना, बुआई करना, खाद उर्वरक देना, सिंचाई करना, फसल की सुरक्षा करना, फसल काटना, अनाज का भण्डार करना। हमें गुरुजी ने बता दिया।

लेकिन हमें ये पता नहीं था कि पुराने जमाने में किसान किससे सिंचाई करते होंगे? तो उन्होंने बताया कि पहले के जमाने में चड़स, नलकूप, ढेकली, रहट, मोटर, डीजल पम्प, विद्युत पम्प आदि से सिंचाई करते थे।

मैंने गुरुजी से वापस पूछा कि अगर हम पानी को पाईप के द्वारा फसल में पहुँचायें तो उसे क्या कहेंगे? तो उन्होंने बताया कि उसे हम ड्रिप सिंचाई कहेंगे।

मजेदार बात तो तब हुई जब मैं घर गया। घर पर जब पिताजी ने मुझसे पूछा कि आज क्या पढकर आए हो? तो मैने उनको सारी बातें बताई। फसलों की बात सुनकर पिताजी भी बताने लगे। उनकी बात सुनकर ऐसा लगा जैसे पिताजी तो गुरुजी से भी ज्यादा जानते है। पिताजी ने मुझे फसलों के दूसरे नाम बताए। पिताजी ने तो बीजों के प्रकार, फसल में पानी की मात्रा, रोग व दवाईयों के नाम, कटाई के साधन और उनको सुरक्षित रखने के तरीके भी बताए।

मैं सोचने लगा कि पिताजी तो कभी स्कूल ही नहीं गए। उन्हे तो पढ़ना-लिखना भी नहीं आता। फिर वे कैसे ये सब जानते है?

सूरज सैनी , उम्र-12 वर्ष, समूह-उजाला

जोड़-तोड़

सोची समझी योजना

जब मैं 5वीं कक्षा में पढ़ता था। तब मुझे भाग नहीं आते थे। आते भी कैसे? मैने भी तो कभी मन से कोषिष नहीं की। और फिर सिखाने वाले से डर भी तो लगता था।

इसी तरह मुझे एक दिन गुरूजी ने बोर्ड पर भाग समझाए। लेकिन मेरे समझ में नहीं आए। तो मैने कॉपी में कुछ भी नहीं किया। गुरूजी ने मेरी कापी चेक की। अब मैंने सवाल नहीं किये थे तो गुरूजी ने मेरे एक मारी। मैं रोने लग गया था। तभी मैडम आई और बोली, "तुम क्यों रो रहे हो?" उस समय तो

गोविन्द नायक, उम्र-12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मैंने मैडम को नहीं बताया कि मेरे गुरूजी ने मारी थी। थोड़ी देर बाद मैडम पढ़ाने लगी। तभी मैडम ने मेरी शक्ल देखकर कहा, "ठीक है! नही बताना तो मत बता पर जा मुंह धो ले।" मै कक्षा से चला गया।

जब मैं वापस आ रहा था तो मुझे गुरूजी ने रोक लिया और बोले कि कहाँ से आया है? मैंने गुरूजी को भी नहीं बताया। बताता भी कैसे? मैड़म हो या गुरूजी, उनको देखते ही मैं सब भूल जाता था। वो क्या कह रहे है और मुझे क्या कहना है? कुछ समझ नहीं आता था। इसलिए कुछ भी गलत-सलत बोलने से अच्छा मैं चुप ही रहता था। पर कभी कभी चुप रहने पर भी मार पड़ जाती थी। इन सब से बचने का एक ही तरीका था। मैड़म हो या सर मैं उनसे दूर ही रहने की कोशिश करता। बस इसी तरह गुरूजी के सवाल से बचकर मैं अपनी कक्षा में आ गया था। मैं जब कक्षा में आया तो मैंने देखा कि गुरूजी अभी भी भाग करवा रहे थे। इससे पहले की मैं नहीं दिखने वाली जगह पर जाकर बैठता। उससे पहले ही गुरूजी ने मुझे बुला लिया। बोले, "भाग सीख ले। फिर खाली कॉपी दिखाएगा।"

मैंने गुरूजी से एक भाग ले लिया था और मैं उसे हल करने लग गया। करने क्या लगा करने का

दिखावा करने लगा। भाग करना आता तो पहली बार में ही कर देता। मगर गुरूजी की तो नजर ही मुझ पर थी। ऐसे में मैं दिखावे के लिए गलत सलत कुछ करने लगा। मैं अच्छी तरह जानता था कि गुरूजी सब देख रहे हैं। इसलिए वे कभी भी कुछ पूछ सकते हैं। या फिर गलत करने पर मार भी सकते है। इस लिए नीचे कॉपी में झुके झुके भी मेरा ध्यान गुरूजी के हाथों पर था। इन्तजार था की कब हाथ उठेगा और अपने गाल पर पड़ेगा। इसलिए गाल को बचाने के लिए गुरूजी की तरफ वाला एक कंधा पहले से ही ऊँचा कर रखा था।

दीपिका मीना, कक्षा-4, फेलोशिप सेंटर-खवा

गुरूजी को भी शायद सारी बात समझ में आ रही थी। इसलिए उन्होने पुराना तरीका छोड़ कर मुझे अपने पास बुलाया और भाग समझाने से पहले मुझसे बाते करने लगे। उन्होने कोई पांच मिनट बात की होगी। जिसमें मुझसे छोटे-छोटे सवाल दिये। जिनके जबाव बहुत आसान थे। इसलिए डर होते हुए भी मैं सही जवाब दे पा रहा था। वे सही जवाब देने पर खुष होते और षाबास कहते। इससे मेरा डर कम होता जा रहा था। मैने इतनी बात पहले कभी किसी गुरूजी से नहीं की थी।

सब ठीक होने पर गुरूजी अपने असली सवाल पर आ गये और बोले, "भाग करने में क्या दिक्कत आ रही हैं?" अब एक दिक्कत हो तो बताता। यहाँ तो ना पहाड़ा आता था और ना पहाड़ा बनाना। डरते डरते एक कंधा ऊपर कर लिया और हिम्मत करके बता ही दिया। गुरूजी भी जैसे भाग से ज्यादा भाग नहीं करने का कारण जानना चाहते थे। इसलिए मुस्कुराए और बोले अगर मैं पहाड़ा बनाकर दे दूं तो कोशिश करोगे? मैने भी एक मुसीबत से बचने के लिए हाँ कर दी। पर यह तरकीब मुझे अगली मुसीबत में ले जा रही थी। सोचा पहाड़ा तो ले लेते है। बाद में किसी से पूछ लेंगे।

गुरूजी ने पहाड़ा बनाकर दे दिया और मैं वहाँ से जाने लगा। पर ये क्या! गुरूजी तो चालाक निकले। उन्होने मुझे अपने पास ही बिठा लिया। पहाड़ा आने से मेरा काम आसान हो चुका था। गुरूजी भी अब दूसरे बच्चों से बात करने लगे थे। मोके का फायदा उठाकर मैने सवाल की तरफ देखा और

हल करने लगा। थोड़ी देर की काटा-फांसी के बाद मैने भाग करना बंद कर दिया और तयः किया की अब जो होगा देखा जाएगा। इस बार डर कुछ कम लग रहा था। यह पहली बार था जब मैने कॉपी पर कुछ किया था। गुरूजी तो जैसे इसी इन्तजार में थे। तुरंत कॉपी लेकर देखने लगे और मैं तैयार था गुरूजी के अचानक होने वाले हमले के लिए। इस बार तो कुछ और ही हो रहा था। गुरूजी मुस्कुराए और बोले, "सवाल तो सही किया है पर काटा-कूटी कम किया कर।" मुझे पहली बार कुछ करने की खुषी हो रही थी। पर ये क्या! गुरूजी ने मुझे एक और भाग का सवाल दे दिया। अच्छी बात यह हुई कि इस बार उन्होने मुझे अपने पास नहीं बिठाया और अपनी जगह पर जाकर करने के लिए कहा।

थोड़ी देर बाद देखता हूँ कि गुरूजी वही सवाल ब्लैक बोर्ड पर लिख रहे हैं। जब तक गुरूजी बोर्ड पर सवाल करते तब तक मै अपना सवाल आधा कर चुका था। करता भी क्यों नहीं उस भाग में भी वहीं पहाड़ा काम आना था जो गुरूजी ने लिख कर दिया था।

गुरूजी ने पूरी कक्षा को कहा, "जो भी भाग पहले करेगा उसे मैं रूल, कटर, इरेजर दूंगा"

अब तो सब जल्दी जल्दी भाग करने लगे। मेरा भाग तो हो चुका था पर दिखाया नहीं। डर था कहीं गलत आया तो पूरी कक्षा के सामने इज्जत उतर जाएगी। गुरूजी तो जैसे सब जानते थे। यों कहो की सब कुछ उनकी योजना के अनुसार ही हो रहा था। वे मेरे पास आए और कॉपी लेकर देखने लगे। कॉपी हाथ में लेते ही उन्होने सबके सामने कहा, "भूपेन्द्र का सवाल सही है और उसने सबसे पहले भी किया है। इसलिए उसे मैं रूल, कटर और इरेजर देता हूं।" सारे दोस्त हैरान परेषान थे। ऐसा कैसे हो गया। होशियार बच्चों को तो विष्वास ही नहीं था कि ये मैने किया है। उन्होने सोचा किसी का टीपा होगा। पर सबसे पहले मैने किया था इसलिए किसी का टीप भी तो नहीं सकता था। अन्दर ही अन्दर मुझे बहुत खुशी हो रही थी। मुझे वह सब सम्मान मिला और मैं गुरूजी का अच्छा बच्चा हो गया। अब मैं भाग सीख गया था और रोज भाग के नये नये सवाल करने लगा। सोचता हूं यह सब ऐसे ही नहीं हुआ था। सब गुरूजी की सोची समझी योजना थी।

भूपेन्द्र सैनी, समूह-सितारा, उम्र-11 वर्ष

अनुराग शर्मा, कक्षा-3, फेलोशिप सेंटर-बावड़ी

कलाकारी

संगीत का जादू

रश्मी, उम्र-8 वर्ष, बावरी बस्ती

एक बार की बात है। एक आदमी था। वह जंगल में अकेला रहता था। उसके साथ एक चींटी भी रहती थी। उस आदमी का नाम रामू था। रामू बहुत अच्छा इंसान था। उस चींटी का नाम मुन्नी था। मुन्नी भी बहुत ईमानदार थी। वह रामू के घर में एक बिल में रहती थी। चींटी रोज शाम को रामू के साथ बैठ जाती थी और रामू के साथ बैठकर मधुर आवाज में गीत गाती थी। रामू और चींटी के गीत की आवाज सुनकर वहाँ सारे जानवर आ जाया करते थे। किसी को भी यह ख्याल नहीं होता था कि वे कहां जा रहे है और क्यों जा रहे हैं। वे तो आवाज की तरफ खींचे चले आते थे। सभी जानवर वहाँ आकर संगीत की धुन पर नाचते थे। रामू आरंभ में तो उनके लिए कुछ नहीं करता था। पर जब वे रोज आने लगे तो उसने उनके लिए खाने की व्यवस्था करने की सोची। अब रामू उनके लिए खाना बनाता था। उन्हें बड़े स्वागत से खाना खिलाता था। उस जंगल में एक शेर भी रहता था। मुन्नी और रामू के गाने पर जंगल में से जानवर निकलकर आ जाते थे। उस समय शेर को बहुत बुरा लगाता था। शेर ने सोचा कि, "ये सभी जानवर रामू के घर क्यों जाते हैं? जब रामू और मुन्नी गाते हैं तब ही सब जानवर जाते हैं। जंगल में रूकते ही नहीं हैं। शाम को मैं भी रामू के घर जाँऊगा और देखूंगा। ऐसा कैसा गीत गाते हैं दोनों।"

शाम होते ही रामू और मुन्नी गीत गाने लगे। जैसे ही गीत की धुन जंगल में फैलने लगी तो सभी जानवर रामू के घर की ओर जाने लगे। अब शेर भी उन जानवरों के साथ रामू के घर की ओर चल दिया। षेर ने जब वहाँ जाकर देखा तो उसको इतना मजा आया कि वह सारी रात गीत सुनता रहा और सबको नाचते देखता रहा। उसने देखा कि सभी जानवर खाना खाकर नाच रहे हैं। अब वह भी रोज रामू के घर आता और सारे जानवर जो काम करते वह भी वही काम करता। मजे की बात तो यह थी की मासाहारी जानवर जो दिन में षाकाहारी जानवरों का शिकार करते थे। रामू के घर शाकाहारी जानवरों को नुकसान नहीं पहुंचाते थे। रामू का संगीत सबको षांत करके रखता था। रामू को सारे जानवरों में अपना परिवार दिखाई देता। उसे कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होता था और जानवर भी आपस में कोई भेद-भाव नहीं करते थे। वे सारे जानवर खुशी से रहते थे।

प्रिया, उम्र-13 वर्ष, समूह-सागर

बात लै चीत ले

मिट्टी की दांतड़ियाँ

दो ठग थे। वे सबको ठगते थे। एक दिन उन्होंने मिट्टी की दांतड़ियाँ बनाई। पहले एक ठक उन्हें बेचने गया। बिना जांचे परखे उसकी दांतड़ियों को सबने खरीद लिया। जब दूसरे दिन दूसरा ठग दांतड़ियाँ बेचने गया तो सभी ने कहा कि कल एक ऐसा व्यक्ति आया जो ऐसी दांतड़ियाँ बेचकर गया। जो एक बार सब्जी काटने में ही टूट गई। इस लिए अब हम कुछ नहीं खरीदेंगे। डर के कारण दूसरे ठग की एक भी दांतड़ी नहीं बिकी।

फिर उन्होने घी बेचने की योजना बनाई। उन्होंने एक घड़े में नीचे तो नकली घी भर लिया और ऊपर थोड़ा सा असली घी भर लिया। पहले वाला ठग एक गाँव में जाकर उस घी को बेच आया। जब दूसरे दिन दूसरा ठग उस घी को बेचने गया तो किसी भी गाँव वाले ने वह घी नहीं खरीदा। उस गाँव में एक आदमी अपने घर में बैठे दूसरे आदमी से कुछ कह रहा था। वह दूसरा ठग उनके घर के पीछे की दीवार में कान लगाकर सुनने लगा।

गाँव वाले कह रहे थे कि बहुत बुरा हुआ सेठजी तो मर गये और उनका बेटा भी घर पर नहीं है। दूसरा व्यक्ति बोला, " भगवान जाने कहाँ होगा, सेठजी का बड़ा बेटा बचपन में ही गाँव छोड़कर कमाने के लिए चला गया था। जो कभी वापस ही नहीं आया।

ठग ने यह बात सुन ली तो वह ठक सेठ का बेटा बनकर रोते हुए उनके घर पर आ गया। सभी ने सोचा कि शायद किसी ने इसके पास पिता के मरने की खबर पहुँचा दी होगी जिससे यह आ गया है। उसका छोटा भाई तो गंगाजी गया हुआ था। तो भाई की पत्नी ने कहा कि जेठ जी से कह दो पिताजी के खर्च (रसोई) का सामान ले आयेगा। तो उन्होंने उस ठक को बक्से की चाबी दे दी और कहा कि बक्से में बहुत सारा धन रखा हुआ है। उस ठक ने रात को ही एक गधे पर सारा समान लाद दिया और लेकर चला गया। रास्ते में दूसरे ठक ने जूती फेंक कर गधे को चमका दिया। गधा चमक गया तो पहला ठक डर गया और गधे को छोड़कर भाग आया। दूसरा ठग उस गधे पर से सामान उतार कर झाड़ी में छिप गया।

पहले ठग को मालूम चल गया कि यह दूसरा ठग ही है और झाड़ी में छिपा हुआ है। उसने ठक से कहा कि तुम इस झाड़ी में से निकल कर सारा धन मुझे दे दो। नहीं तो मैं इस झाड़ी में आग लगा दूंगा। पहले ठग ने जैसे ही माचिस की सींक जलाई तो दूसरा ठक झाड़ी में से बाहर निकल आया और उसने कहा, "हमने बहुत लोगों को ठगा है। हम ऐसा करते हैं कि इस धन को आधा-आधा बांट लेते हैं और मेहनत की जिंदगी शुरु करते हैं।" पहला ठक इस पर राजी हो गया तो उन्होंने उस धन को आधा-आधा बांट लिया और अपने-अपने रास्ते पर चले गये।

बुद्धि प्रकाश गुर्जर, उम्र-12 वर्ष, समूह-सागर

रेल्वे प्लेटफोर्म का दृश्य

गत सोमवार को मैं अपने मित्र को लेने रेल्वे स्टेशन पर गयी। मैंने एक प्लेटफोर्म का टिकिट लिया और वहाँ अंदर चली गयी। रेल्वे स्टेशन पर बहुत सारे महिला-पुरुष थे। कुछ बच्चे खेल रहे थे,

कुछ चिल्ला रहे थे,

कुछ खाना खा रहे थे,

कुछ लोग अखबार पढ़ रहे थे,

कुछ लोग आपस में बातें कर रहे थे,

कुछ प्लेटफार्म पर घूम रहे थे,

कुछ लोग प्लेटफोर्म पर लगी बैंचों पर बैठे हुए थे तो कुछ खड़े-खड़े ही रेल का इंतजार कर रहे थे। प्लेटफोर्म पर ट्रोली वाले खाने-पीने का सामान बेच रहे थे। जिसमें बिस्किट, चाय, कुरकुरे, बड़े, पकौड़ी, चिप्स, ठण्डा पानी आदि बेच रहे थे। कुछ व्यक्ति बैठे-बैठे चाय पी रहे थे।

करीना मीना, कक्षा-4, फेलोशिप सेंटर-खवा

लगभग एक घंटे के बाद मेरे दोस्त की ट्रेन आई। ट्रेन के स्टेशन पर रुकते ही प्लेटफार्म पर खड़े लोग ट्रेन में चंढ़ने की जल्दी करने लगे। मेरे दोस्त को ट्रेन से उतरने में परेशानी हुई। क्योंकि ट्रेन में चंढ़ने वाले लोग जल्दी मचा रहे थे एवं शोरगुल भी बहुत हो रहा था। फेरी वाले भी चाय, कचोरी, बड़े, समोसा बेचने के लिए आवाजें लगा रहे थे। जैसे तैसे दोस्त नीचे आए। फिर मैं अपने दोस्त से मिली और उसे लेकर घर आ गई।

भारती मीना, कक्षा-7, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय छारौदा

माथा पच्ची

1. ऐसी कौनसी चीज है जिसे सब खाते हैं और लड़कियाँ पहनती हैं?
2. ऐसी कौनसी चीज हैं जो फल भी है, फूल भी है और मिठाई भी है?
3. ऐसी कौनसी चीज है जिसको हम खाते भी हैं और वह एक भाषा भी है?
4. 5 खरगोश 5 दिन में 5 सेब खा जाते हैं तो 10 खरगोश 10 दिन में कितने सेब खायेंगे?
5. ऐसी कौनसी चीज हैं जिसे बाजार से लाते हैं तब काला रहता है। उपयोग में लेते समय लाल हो जाता है और फेंकते समय सफेद हो जाता है?

शानू वैष्णव, प्रिया वर्मा, वन्दना सैनी, कक्षा-7, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कुतलपुरा मालियान

कोमल बैरवा, उम्र-12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

हीहीही-ठीठीठी

1. शिक्षक - बच्चों अगर तुम्हारे कांटा लग जाये तो तुम क्या करोगे
   बच्चे - हम कांटे को चुप-चाप निकाल लेंगे। हम डॉक्टर तो नहीं है जो पट्टी कर लेंगे।
2. अध्यापक - बच्चों तुम्हारे पास 10 सेब है। उनमें से तुमने 5 सेब खा लिए तो बताओ कितने सेब बचे।
   बच्चे - हमारे पास सेब ही नहीं हैं।
   अध्यापक - मान लो, तुम्हारा क्या जा रहा है।
   बच्चे - 10 सेब में से 5 गये तो 20 बचे।
   अध्यापक - कैसे
   बच्चे - आपका क्या जा रहा है, आप भी मान लो।

पवन गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

उड़ता उड़ता मोर आया
चोंच में दाना लेकर आया
बारिश में वो नाचता आता
अपने मोरंगे देकर जाता...

सुलोचना सैन उम्र-12 वर्ष, समूह-रंगोली द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके **मोरंगे** को भेजो।

अभय सैनी, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर-खवा

कृष्णा नायक, उम्र-6 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

एक बार एक लोमड़ी थी। वह बहुत चालाक थी। एक दिन वह शिकार की तलाश में घूम रही थी। तभी उसे खरगोश दिखाई दिया। उस खरगोश के पेर में चोट लग रही थी इसलिए वह भाग नहीं पा रहा था...

रामवीर अशोक, समूह-तिरंगा द्वारा शुरु की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

गायत्री, उम्र-11 वर्ष, बावरी बस्ती

पहेलियों के ज़वाब -

1. लोंग 2. गुलाबजामुन 3. चीनी 4. 20 5. कोयला

सोनम मीना, उम्र-7 वर्ष, फेलोशिप सेंटर-खवा